बुद्ध कौन थे?

भगवान बुद्ध का जन्म लगभग 2550 साल पहले लुंबिनी, भारत (अब नेपाल में) में हुआ था।

उनका जन्म का नाम राजकुमार सिद्धार्थ गौतम था। सिद्धार्थ का अर्थ है "जिसने अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लिया है" और गौतम उनके परिवार का नाम था। उनका वंश शाक्य था।

उनके पिता का नाम राजा शुद्धोदन और माता का नाम मायादेवी था। जब वे सात दिन के थे तब उनकी माता मायादेवी का देहांत हो गया था। उनका पालन-पोषण उनकी मौसी महापजापति गोतमी ने किया था।

उनके जन्म के समय यह भविष्यवाणी की गई थी कि यदि वे गृहस्थ जीवन में रहे तो विश्व-सम्राट बन जाएंगे, लेकिन यदि वे भिक्षु बन गए तो पूरी तरह से प्रबुद्ध मुक्त (एक बुद्ध) बन जाएंगे।

वह एक विशेषाधिकार प्राप्त शाही परिवार में एक राजकुमार के रूप में पैदा हुऐ थे और शाक्यों पर शासन करने के लिए उत्तराधिकार की पंक्ति में अगले थे। वह कई अलग-अलग महलों, सहपाठियों, और सुविधाओं के साथ अत्यधिक विलासिता में पले-बढ़े।

बुद्ध होने वाला बच्चेने (जिसे बोधिसत्व भी कहा जाता है, जो ज्ञानोदय के लिए नियत है) पहली बार ध्यान तब किया था जब वह छोटा था। उनके पिता, राजा शुद्धोदन, खेती अनुष्ठान में लगे हुए थे और बालक बोधिसत्व ने एक पेड़ की छाया के नीचे ध्यान किया। ऐसा कहा जाता है कि जैसे ही सूर्य उदय हुआ, बालक बोधिसत्व की रक्षा के लिए पेड़ की छाया नहीं हिली।

उन्हों ने तत्कालीन लोकप्रिय वैदिक हिंदू धर्म, युद्ध और सैनिकों के शास्त्र, और घोड़ों और हाथियों की सवारी सहित सभी कला और शास्त्र सीखे।

उनका विवाह राजकुमारी यशोधरा से हुआ था और उन्हें जीवन की सभी सुविधाएं और विलासिता प्रदान की गई थी।

फिर बहुत ही कम समय में, उन्होंने चार दिव्य दूतों को देखा: एक बीमार आदमी, एक बूढ़ा आदमी, एक मरा हुआ आदमी, और एक साधु।

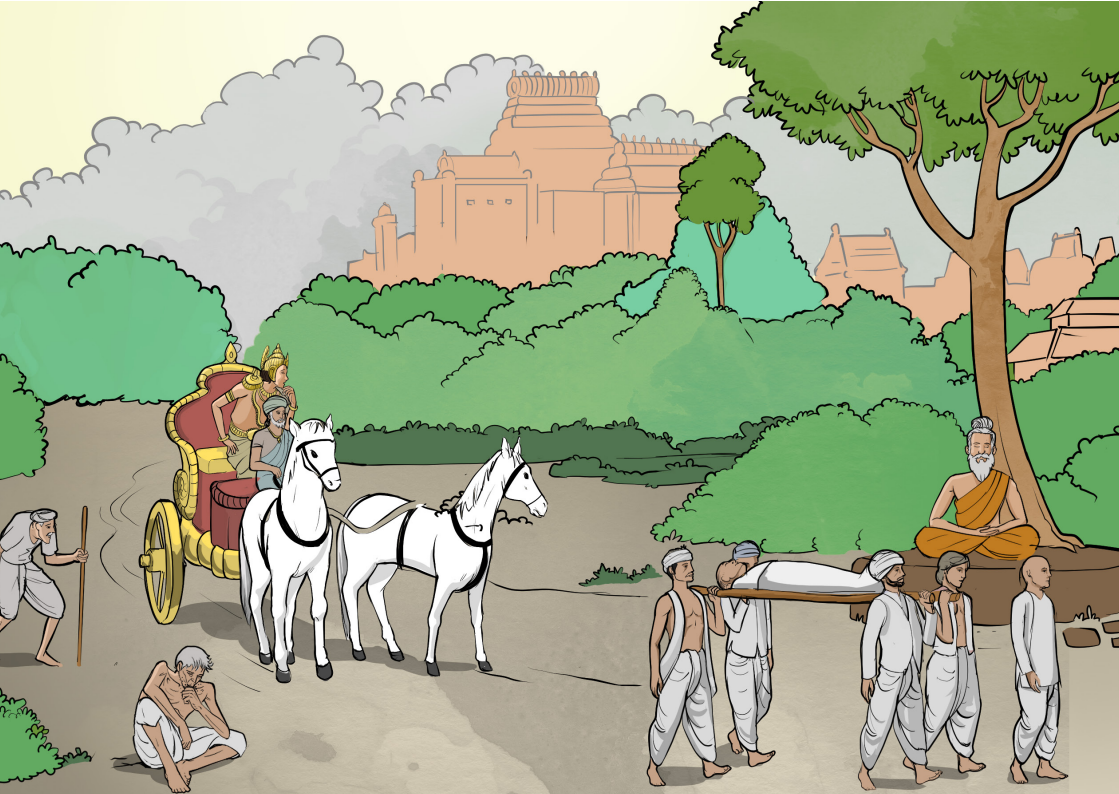

उन्हें महसूस हुआ कि हर कोई बीमार हो जाता है, बूढ़ा हो जाता है, और देर-सबेर सभी मर जाते हैं।

उन्होंने 29 साल की उम्र में जीवन के दुक्खों का एक स्थायी समाधान, एक स्थायी इलाज, खोजने के लिए दुनिया का त्याग किया।

उन्होंने विभिन्न शिक्षकों के अधीन अध्ययन किया और उनकी शिक्षाओं में महारत हासिल की लेकिन यह महसूस किया कि ये सभी शिक्षाएँ विभिन्न दुनिया में जीवन की निरंतरता की ओर ही ले जाती हैं।

फिर उन्होंने स्वयं अत्यधिक तपस्या सहित विभिन्न विधियों का अभ्यास किया।

परीक्षण और त्रुटि के द्वारा, उन्होंने जो काम नहीं करता था उसे समाप्त कर दिया और जो काम करता था उस पर ध्यान केंद्रित किया और समय के साथ, धीरे-धीरे लेकिन निश्चित रूप से मृत्युहीन, अमृत, अमर को पाया।

वे त्याग के सात साल बाद, 36 साल की उम्र में प्रबुद्ध हो गए, और फिर अगले 44 वर्षों के लिए, उन्होंने उत्तर भारत की गंगा घाटी में शिक्षाओं [जिसे धर्म कहा जाता है] का प्रचार किया।

उन्होंने जो कुछ भी सिखाया उसका एक ही उद्देश्य था: जीवन के दुक्खों को कैसे समाप्त किया जाए। उन्होंने जो भी धर्म पढ़ाया, वह सभी को नि:शुल्क प्रदान किया। अपनी मृत्युशय्या पर भी, अपने निधन से कुछ घंटे पहले, उन्होंने अंतिम प्रत्यक्ष शिष्य को धर्म की शिक्षा दी! ओह, करुणा!

उन्होंने जिन उपदेशों का प्रचार किया, वे कालातीत हैं और हर एक को आने और देखने, कोशिश करने और स्वाद लेने के लिए आमंत्रित करते हैं।

उनकी पालक माता महापजापति गोतमी अरहंत बन गई, और उनकी पत्नी यशोधरा (उर्फ भद्दा कच्चाना) भी। उनके पुत्र राहुल अरहंत बन गये और पिता राजा शुद्धोदन गैर-वापसी बन गये।

इस श्रृंखला की अन्य पुस्तिकाएँ

पुस्तक 01: बौद्ध धर्म क्या है?
पुस्तक 02: बुद्ध कौन थे?
पुस्तक 03: बौद्ध धर्म का सार
पुस्तक 04: त्रिरत्न
पुस्तक 05: चार आर्य सत्य
पुस्तक 06: आर्य अष्टांगिक मार्ग
पुस्तक 07: कर्म
पुस्तक 08: पुण्य
पुस्तक 09: ध्यान
पुस्तक 10: स्मरणें
पुस्तक 11: बौद्ध गृहस्थ
पुस्तक 12: बौद्ध धर्म के पथ और लक्ष्य
पुस्तक 13: बौद्ध धर्म की शाखाएँ
पुस्तक 14: गृहस्थों को सलाह
पुस्तक 15: पतियों और पत्नियों को सलाह
पुस्तक 16: बुढ़ापा, बीमारी और मृत्यु
पुस्तक 17: दस धारणाएं

कृपया इन पुस्तिकाओं को अपने पास के बौद्ध मठ में मांगें, LearnBuddhism.org पर जाएं, या itivuttaka@gmail.com पर नाम, डाक पता और ईमेल पते के साथ एक ईमेल भेजें।

DHAMMA PUBLISHERS
Roslindale, MA, USA

Book 2HIN

बुद्ध कौन थे?